हिन्दी तथा कोंकणी उपन्यासों में बाल विमर्श
('उसके हिस्से की धूप' और 'पोको' के संदर्भ में)

आश्मा योजिन डिसूजा
शोधार्थी
विश्वविद्यालय कॉलेज
मंगलुरु, कर्नाटक
Mob. 8073482090
ashmayoiginedsouza@gmail.com

मनुष्य एक संघजीवी है । समाज के अंतर्गत रहने के कारण सामान्यतः ही उसमें जिज्ञासु एवं चिंतनशील प्रवृत्तियों का समावेश होता है । मानव की यही जिज्ञासु प्रवृत्ति उसे साहित्य सृजन के लिए प्रेरित करती है । उपन्यास गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं में से एक है । उपन्यास विधा के अंतर्गत साहित्यकार मानव जीवन के मूल्यांकन के साथ उसके विविध पहलुओं पर अपनी गहनशील दृष्टि से देखने का प्रयास करता है । उपन्यास मानव मन के भावों का प्रस्फुटन है, इसमें जीवन के व्यापक फलक को विविध आयामों के माध्यम से चित्रित किया जाता है । उपन्यास को परिभाषित करते हुए डॉ भागीरथ मिश्रा ने कहा है कि, "युगों की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की एक पूर्ण व्यापक झाँकी प्रस्तुत करने वाला गद्य काव्य उपन्यास कहलाता है ।"[1] कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि उपन्यास समाज के अंतर्गत घटित होने वाली घटनाओं का विस्तृत फलक है, जिसमें मानव जीवन की विविध परिस्थितियों और समस्याओं के समावेशों के साथ जीवन जीने के लिए दिशा निर्देशों का प्रस्तुतीकरण भी होता है ।

हिंदी तथा कोंकणी साहित्य की उपन्यास विधा अत्यंत समृद्ध रही है । दोनों भाषाओं की औपन्यासिक विधा में सामाजिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक एवं हास्य प्रधान आदि बिंदुओं को केंद्र में रखकर लिखा जा रहा है ।

प्रस्तुत आलेख में बाल मजदूरी व बाल श्रम जैसी समस्या पर आधारित हिंदी उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' और कोंकणी भाषा का उपन्यास 'पोको' का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन करने का प्रयास किया है । 'उसके हिस्से की धूप' हिंदी की वरिष्ठ कथाकार और बाल मनोविज्ञान विशेषज्ञ उषा यादव द्वारा लिखा गया है जिसमें लेखिका ने बाल मन की इच्छाएँ उनकी कुंठाओं और मनोवृतियों पर प्रकाश डाला है । उपन्यास की कहानी के केंद्र में बालिका वृंदा है जो तीन साल की आयु में अपने पिता के कहने पर तप करने के लिए मजबूर है । उपन्यास का भौगोलिक परिवेश का केंद्र आगरा का अमरपुरा गाँव है जहाँ सूखे के कारण हाहाकर मचा हुआ है। गाँव वालों द्वारा इंद्रदेव को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ किया जा रहा है । गाँव की पांच बालिकाओं को तप पर बिठाया गया है जिनमें से वृंदा भी एक है जो मास्टर हरि सिंह और सुनीता की छठी संतान है । हरि सिंह गाँव के प्राथमिक विद्यालय में मास्टर है । सुनीता और हरी सिंह की सात बेटियाँ हैं । बच्चों के तप पर बैठने से गाँव में मूसलाधार वर्षा हुई , इसका श्रेय गाँव वालों के सामने हरिसिंह ने तप पर बैठी अपनी पुत्री वृंदा को दिया । दूसरे दिन बच्चियों की तस्वीर अखबार में भी छप गई। हरिसिंह पूरे गाँव से अपनी बेटी की वाहवाही करवाता है किंतु उसकी इस हरकत से सुनीता खुश नहीं है । सुनीता को तीन साल

की मासूम वृंदा का दिन भर भूखे –प्यासे हवन के आगे बैठना पसंद नहीं था किंतु अपने पति के आगे वह मजबूर थी । दूसरे दिन वृंदा हरि सिंह द्वारा तप की बात सुनते ही कांपने लगी और दौड़ कर अपनी माँ के गले से लग गयी । समय बीता जा रहा था गाँव वाले तप की बात को भूलने लगे । हरि सिंह गाँव वालों के मन में तप वाली घटना को जीवित रखना चाहता था । इधर सुनीता को फिर से गर्भ ठहरा तो हरी सिंह ने गाँव वालों से कहा कि, वृंदा ने घोषणा की है कि उसकी पत्नी सुनीता पुत्र रत्न को जन्म देने वाली है । नौ महीने पश्चात सुनीता ने पुत्र को जन्म दिया । वृंदा की भविष्यवाणी सही होने पर अनपढ़ गाँव वाले उसका जय जयकार करने लगे । हरि सिंह ने जैसा सोचा वैसा ही हुआ । अपनी बेटी वृंदा को देवी स्वरूपा कहलवाकर उससे वह घर की संपदा बढ़ाना चाहता था इसलिए वह वृंदा को देवी बनाने में लगा रहा । सबसे पहले उसने वृंदा के खेल–कूद पर रोक लगाया तत्पश्चात उसकी शिक्षा पर, धीरे–धीरे हरि सिंह की योजनानुसार वृंदा ढलने लगी । वह अपनी बच्ची को मानसिक एवं शारीरिक स्तर पर देवी बनाने लिए तैयार कर चुका था । उसने अपनी योजनानुसार चैत्र नवरात्रि के समय वृंदा को मंदिर में बिठाने के लिए ग्रामप्रधान राधा माधव की सहायता ली । ग्राम प्रधान की सहमति से वृंदा को चैत्र नवरात्रि के पहले दिन पूरे गाँव वालों के सम्मुख देवी मानकर मंदिर में बिठाया गया । पूरे दिन मंदिर में एक ही मुद्रा में बैठी बेटी की दशा को देखकर माँ सुनीता का कलेजा फट रहा था किंतु वह अपने हृदयहीन पति के आगे बेबस थी । सुनीता अपनी बेटी को सामान्य बच्चियों की तरह जीवन देना चाहती थी । उसकी बड़ी बेटियों को हरी सिंह ने केवल पांचवी कक्षा तक ही पढ़ाया था । सुनीता मंदिर और घर के कामों के बीच उलझ चुकी थी । उससे वृंदा की हालत देखी नहीं जा रही थी । तीन वर्ष बीतते–बीतते वृंदा की स्थिति बड़ी दयानीय हो गई । पूरे दिन में वह चाय पानी और दूध के अलावा कुछ भी नहीं लेती थी । उसकी हड्डियाँ कमजोर हो गई थी । यह देखकर सुनीता ने बेटी का डॉक्टर से इलाज करवाने की बात कही तो हरी सिंह ने साफ–साफ इन्कार कर दिया । वृंदा की स्थिति से हरि सिंह भी अवगत था । उसे लगा कि यह मरणासन्न बालिका ज्यादा दिन जीवित नहीं रह पायेगी और वृंदा का देवीस्वरूपा जगजाहिर करने के कारण उसका इलाज करवाना उसके योजनानुसार संभव नहीं था । इसलिए उसने सोचा कि नौ साल की वृंदा को जल समाधि लेने के लिए तैयार किया जाए । वह सुनीता की अनुपस्थिति में वृंदा से देवलोक, परियों की बातें करने लगा । मासूम वृंदा पर उसकी बातों का प्रभाव पड़ने लगा तो वह जल समाधि लेने के लिए मान गई । वृंदा द्वारा जल समाधि की बातें सुनकर सुनीता का मातृ हृदय तड़प उठा और वह अपने पति से बेटी की जान की भीख माँगने लगी किंतु हरि सिंह ने उसे डाँट–फटकार कर चुप कराया । जैसे ही मंदिर में जल समाधि के लिए वृंदा को तैयार किया जाने लगा वैसे ही सुनीता अंधेरे में हिम्मत करके अकेले पिनाहट पुलिस चौकी पहुँचकर अपनी बेटी पर हरि सिंह द्वारा हो रहे अन्याय के विरूद्ध रिपोर्ट लिखवाने गयी । सुनीता की गुहार पर तुरंत पुलिस ने अमरपुरा के मंदिर के ताल पर पहुँचकर डूबती हुई वृंदा को बचाया ।

कोंकणी के प्रतिभा संपन्न साहित्यकार नंदा धर्मा बोरकर द्वारा लिखित 'पोको' उपन्यास कोंकणी साहित्य की अमूल्य निधि है । 'पोको' उपन्यास पूर्णतः एक बालक के जीवन की गाथा है । बालपन से लेकर युवावस्था तक एक आम जिंदगी जीने के लिए किया गया संघर्ष ही पोको का जीवन है । पोको सवर्णेतर समाज से संबंध रखता है । उसका जन्म गोवा के एक छोटे से गाँव खेड़ेगाँव में हुआ । उसके माता–पिता शांतू और दत्तू गरीब मजदूर हैं । पोको शांतू और दत्तू का बड़ा बेटा है, जिसके पाँच भाई बहन हैं । दत्तू की कमाई से उसका घर बड़ी मुश्किल से चल रहा था इसलिए शांतू भी मजदूरी करने जाती है । माँ की अनुपस्थिति में पोको अपने छोटे भाई बहनों को संभालता है । वह माँ के साथ घर के कामों में हाथ बँटाता है । शांतू पोको को पढ़ाना चाहती है लेकिन वह पहली कक्षा तक ही पढ़ पाता है । पोको के पिता उसे सदु कामत के घर नौकरी के लिए भेजते हैं । आठ साल के बालक से सदु कामत खेत का हर प्रकार का काम करवाता है । पोको उसके इस व्यवहार से तंग आकर भाग जाता है । घर की गरीबी के कारण पोको माँ–बाप से दूर पणजी के जमींदार के यहाँ घरेलू काम करने के लिए मजबूरीवश जाना पड़ता है । काम के

प्रति उसकी ईमानदारी सबको भाती है । पणजी में दो साल रहकर वह कई अनुभव प्राप्त करता है । पोको अपने परिवार के लिए कभी मौसी के घर तो कभी दुकान पर काम करने के लिए मजबूर हो जाता है । दुकान में उसके ऊपर चोरी का आरोप लगा दिया जाता है । दुकान में काम छोड़ने के पश्चात होटल में दो साल काम करता है । धीरे–धीरे पोको स्वतंत्र रूप से काम करना सीखता है । वह खान में मजदूरों की सप्लाई करने का कॉन्ट्रैक्ट शुरू करता है । अपनी मेहनत के पैसों से हल और बैल खरीदकर जमींदारों का खेत जोतने लगता है । किंतु छोटी बहन की शादी के लिए उसे हल और बैल बेचने पड़ते हैं । वह 21 साल की उम्र में काशीनाथ नामक शिक्षित लड़के को अपना मित्र बनाता है । काशीनाथ की अंग्रेजी से प्रभावित होकर स्वयं अंग्रेजी सीखने की कोशिश करता है । पोको को 75 रुपये की सुपरवाइजर की नौकरी मिलती है । काम के प्रति उसके अनुशासन से मजदूर प्रभावित होते हैं । किसी परिचित के कहने पर हिंदी परीक्षा के साथ–साथ सातवीं कक्षा में उत्तीर्ण होता है । गोवा से दसवीं की परीक्षा में भी बैठता है, हिंदी से संबंधित सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होता है । आगे जाकर वह मिशनरी स्कूल में हिंदी शिक्षक पद के लिए उसकी नियुक्त होता है । वह अपनी योग्यता के बल पर उच्चतर शिक्षा बी.ए., एम.ए. तक की डिग्रियाँ हासिल करता है ।

उपर्युक्त दोनों उपन्यासों में बच्चों की मानसिक और सामाजिक उत्थान, पतन की समस्याओं पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है । शिक्षा मानव समाज के विकास और प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है । इसी शिक्षा को पाने के लिए 'उसके हिस्से की धूप' और 'पोको' जैसे उपन्यासों में चित्रित बालक संघर्षरत दिखाई देते हैं । वृंदा पिता की मोटी कमाई का जरिया बनती है । चार वर्ष तक अपनी बेटी पर हो रही ज्यादती को देखकर सुनीता टूट जाती है । सुनीता वृंदा का इलाज करवाने के लिए अपने पति से प्रार्थना करती है परंतु हरि सिंह इसके लिए साफ–साफ मना करते हुए कहता है कि, "कहा न उसे एक आम बच्ची की तरह किसी चिकित्सक के पास ले जाना मुझे मंजूर नहीं है । 'पोको' में बालक पोको अपने परिवार के लिए हर तरह का काम करने के लिए तैयार है । वह मेहनत से दूर नहीं भागता । हर चीज को स्वाभाविक रूप से स्वीकार करना उसकी नियति बन चुकी है । पोको उपन्यास में उपन्यासकार आशावादी दृष्टिकोण को अपनाते हुए पोको को एक सफल अध्यापक के रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हैं । वहीं 'उसके हिस्से की धूप' में लेखिका उषा यादव अशिक्षा, अंधविश्वास के कारण नारी की दुर्दशा, कन्या जन्म को लेकर पुरुष की मानसिकता जैसे बिंदुओं के माध्यम से समाज को जगाने का प्रयास करतीं हैं ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1 डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय– समकालीन हिंदी उपन्यास दशा और दिशा– पृ. सं. 15

2 उषा यादव– उसके हिस्से की धूप– सामयिक प्रकाशन

3 नंदा धर्मा बोरकार– पोको– 'बिम्ब प्रकाशन